19:28

Setu सेतु

** ISSN 2475-1359 **

* Bilingual monthly journal published from Pittsburgh, USA :: पिट्सबर्ग अमेरिका से प्रकाशित द्वैभाषिक मासिक *

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा और मीराबाई

मंजु रानी

सह-आचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय

ईमेल:

manjurani@kmc.du.ac.in

चलभाष: 8860787419

डॉ. मंजु रानी

मीरा के काव्य में लोक गीतों की भाषा का अध्ययन

मीरा की काव्य भाषा का महत्वपूर्ण पक्ष है लोकतत्व। मीरा को विद्रोह के लिए जो भाषा मिली है, वह लोक से मिली है, जबकि वह खुद राजघराने की हैं,इसलिए मीरा की कविता में लोकगीतों की पंक्तियाँ मिलती हैं। ये पंक्तियाँ किसी लोकगीत की ही लगती हैं:-

> सास बुरी अर नणद हठीली, लरि लरि दे मोहिं तारी, हे माय।
> मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल की बारी, हे माय।1